अथ श्रीराधागोपाल वंदन.

श्रीराधागोपाल पद कर प्रणाम उर धार ॥ वरणूं कछु अनुरागरस यथा बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥

दयासिंधु अति सुखसदन सदा रहो अनुकूल ॥ नाथ न आनो हृदयमें मोपामरकी भूल ॥ ४ ॥

अथ श्रीवृंदावनवंदना.

धनि वृंदावनधाम है धनि वृंदावन नाम ॥ धनि वृंदावनरसिकजन धनि श्रीराधाश्याम ॥ ५ ॥

वृंदावन जे वासकर शाकपात नित खात ॥ तिनके भागनकूं निरखि ब्रह्मादिक ललचात ॥ ६ ॥

हवन भये ब्रजमै प्रगट यही रही मन आस ॥ नित प्रति निरखत युगुलछबि करि वृंदावनवास ॥ ७ ॥

अथ चेतावनीपुनगुण दोषलक्षण.

बहुत गई थोरी रही नारायण अवचेत ॥ काल चिरैया चुगरही निशिदिन आयू खेत ॥ ८ ॥

नारायणसुखभोगमें तू लंपट दिन रैन ॥ अंतसमय आयौ निकट देखि खोलकै नैन ॥ ९ ॥

धन यौवनयों जायगो जाविधिउडतकपूर ॥ नारायणगोपाल भजि क्यों चाटे जगधूर ॥ १० ॥

रंभक शुंभ निशुंभ अरु त्रिपुरआदि

लैसूर ॥ नारायण या कालने किये सक
ल भट चूर ॥ ११ ॥

हिरण्याक्ष जगमें विदित हिरण्यक
श्यप बलवान ॥ नारायण छिनमें भये ये
सबराखसमान ॥ १२ ॥

सगर नहूष ययाति षट और अनेक
महीप ॥ नारायण वह अब कहां भुजब
ल जीते द्वीप ॥ १३ ॥

कुंभकर्ण दशकंठसे नारायण रणधी
र ॥ भये सकल भट काल वश जिनके
कुलिश शरीर ॥ १४ ॥

दुर्योधन जगमें विदित जरासंध शि
शुपाल ॥ नारायणसो अब कहां अभि
मानी भूपाल ॥ १५ ॥

नारायण संसारमें भूपति भये अनेक॥
मैं मेरी करते रहे लेन गये तृण एक ॥१६

भुजबल जीते लोक सब निर्भय सुख
धनधाम ॥ नारायण तिन नृपनको
लिख्योरहिगयो नाम ॥ १७॥

हाथ जोर ठाढो रह्यो जिनके सन्मुख
काल॥ नारायण सोऊ बली परे कालके
गाल॥ १८॥

नारायण नवखंडमें निर्भय जिनको
राज॥ ऐसे विदित महीपजग ग्रसे काल
महाराज॥ १९॥

गज तुरंग रथ सेन अति निशि दिन
जिनके द्वार ॥ नारायणसो अब कहां
देखौ आँख पसार॥ २०॥

नारायणनिजहाथपैजे नरधरतसुमेर॥ सोउ वीर या भूमिपै भये राखके ढेर २१

जिनके सहजाहि पग धरतरज सम होत पषान ॥नारायण तिनको कहूं रह्यो न नाम निसान ॥ २२ ॥

नारायण जिनके भवन विधिसम भोग विलास ॥ अंत समय सब छांडिके भये काल के ग्रास ॥ २३ ॥

जिनको रूप निहारिके रवि शशि रथ ठहरात ॥ नारायण ते स्वप्नसम भये मनोहर गात ॥ २४ ॥

रेमन क्यों भटकत फिरे भज श्रीनंदकुमार ॥ नारायण अबहूँ समझि भयो न कछू विगार ॥ २५ ॥

नारायण शुभ काज ते जा विधि आ वत लाज ॥ जो ऐसे अघसों करैं फिर क्यों होय अकाज॥ २६ ॥

चारदिननकी चांदनी यह संपति संसार ॥ नारायण हरि भजन करि जा सों होय उबार ॥ २७ ॥

उर भीतर अति चाहना बाहर राखत त्याग ॥ नारायण वा त्याग पै परो भारकी आग ॥ २८ ॥

मान बडाई ईरषा मनमें भरीं अनेक ॥ नारायण साधूबने देखो अचरजएक २९

तेरे भावे कछुकरौ भलो बुरो संसार॥ नारायण तू बैठिकै अपनो भवन बुहार ॥ ३० ॥

नारायण सत्संग करि सीख भजन की रीति ॥ काम क्रोध मद लोभमें गई आयुर्बल बीति ॥ ३१ ॥

तनक बडाई पायके मनमें अधिक गरूर ॥ नारायण जिन बैठि मग साहिबको घर दूर ॥ ३२ ॥

यह सोभासंसारकी ज्यों टेसूके फूल ॥ नारायण फल आश तजि ललित देख जिन भूल ॥ ३३ ॥

धन विद्या गुण औरबल यह न बडप्पन देत ॥ नारायण सोई बडो जाको हरिसों हेत ॥ ३४ ॥

सो दुख भोगत आपही जो दुख अपनी टांट ॥ नारायण भवरोगको कोलेवोगो वांट ॥ ३५ ॥

तात मात तिय भ्रातसुत और सक
ल परिवार ॥ नारायण अपनो वही जा
कौ हरिसों प्यार ॥ ३६ ॥

नारायण हरि भजन में तू जिन देर
लगाय ॥ का जानें या देरमें श्वास रहे
कै जाय ॥ ३७ ॥

नारायणविन बोधके पंडित पशू स
मान ॥ तासों अति मूरख भलो जो सु
मिरे भगवान ॥ ३८ ॥

ज्ञान कथा सीखी घनी प्रश्न करत
अतिगूढ ॥ नारायण विन धारणा वृथा
बकत है मूढ ॥ ३९ ॥

पुण्य पाठ पूजा प्रगट करत सहित
हंकार ॥ नारायण रीझै नहीं चतुरनको
सिरदार ॥ ४० ॥

नारायण जाकी विभव तनधन धरा निकेत ॥ तिहिं हित कौडी देतमें करभ रकर जल लेत ॥ ४१ ॥

भाव भक्ति सतसंगकी सुपने हूँ नहिं सार ॥ नारायण समझे बडी सुतदाराकी लार ॥ ४२ ॥

पगसों नाव निहारि के पुनि गज हो त अरूढ ॥ भोगन ते तरवो चहैं नारायण मतिमूढ ॥ ४३ ॥

चटक मटक नित छैलबानि तकत चलत चहुँ ओर ॥ नारायण यह सुधि नहीं आज मरे के भोर ॥ ४४ ॥

नारायण जब अंतमें यम पकरेंगे वाहिं ॥ तिनसों भी कहियो हमें अबी सोफतौ नाहिं ॥ ४५ ॥

मन लाग्यो सुखभोगमें तरन चहै संसार ॥ नारायण कैसे बने दिवस रैन को प्यार ॥ ४६ ॥

कामक्रोध मद लोभकी लगी हिये में आग ॥ नारायण वैराग भट सहित ज्ञान गये भाग ॥ ४७ ॥

विद्यावन्त स्वरूप गुणसुत दारा सुख भोग ॥ नारायण हरि भक्ति विन यह सब ही है रोग ॥ ४८ ॥

नारायण निज हियेमें अपने दोष निहार ॥ तापीछे तू और के अवगुन भले विचार ॥ ४९ ॥

संतसभाझांकी नहीं कियो न हरि गुण गान ॥ नारायण फिर कौन विधि तू चाहत कल्यान ॥ ५० ॥

जिन संतनके दरशसों नारायण अघजात ॥ तिनें कहत यहफिरतहैं घर घर टुकडे खात ॥ ५१ ॥

बहु विधि पूजा दान व्रत करत गर्वके साथ ॥ नारायण विन दीनता द्रवै न दीनानाथ ॥ ५२ ॥

विद्या पढि करतौ फिरे औरन को अपमान ॥ नारायण विद्या नहीं ताहि अविद्या जान ॥ ५३ ॥

कथा सुनत गई आयुबल भयो न मन अनुराग ॥ नारायण तिन श्रवण सों भवन भलेहैं नाग ॥ ५४ ॥

कथनी कथ केते गये कर्म उपासन ज्ञान ॥ नारायण चारों युगन करनी है परमान ॥ ५५ ॥

भीतरसों मैलो हियो बाहिर रूप अनेक ॥ नारायण तासों भलो कौआत नमन एक ॥ ५६ ॥

अपनो साखी आप तूनिज मनमाहिं विचार ॥ नारायण जो खोट है ताकूं तुरत निकार ॥ ५७ ॥

जिनको मन निज वश भयो तजिकर विषय विलास ॥ नारायण ते घर रहौ चाहै करो वनवास ॥ ५८ ॥

नारायण सुख भोगमें मस्त सभी संसार ॥ कोउ मस्त वा मौजमें देखौ आंख पसार ॥ ५९ ॥

नारायण ते धन्य नर जिन वश कीये पांच ॥ साहिब सों मुखऊजरें जगकी लगी न आंच ॥ ६० ॥

इकनारी अवगुण भरी एकतिया गुणवंत ॥ नारायण सोई भली जापै रीझत कंत ॥ ६१ ॥

रूप रंग सुंदर घनौ चतुर कुलवती नार ॥ नारायण तौ कहा भयो प्रीतम करत न प्यार ॥ ६२ ॥

चंद्रवदन मृगसम नयन गति गयंद मृदुबोल ॥ नारायण हरि भक्ति विन यह कौडीके मोल ॥ ६३ ॥

नारायण तौ कहा भयो पाये नैन विशाल ॥ नैन वही जिनमें वसें श्रीराधा गोपाल ॥ ६४ ॥

लखी न जिन छबि श्याम की कियो न पलभरि ध्यान ॥ नारायण ते जगतमें प्रगटे निपट पषान ॥ ६५ ॥

नारायण यह जगतमें यह दोवस्तू सार ॥ सबसों मीठो बोलवो करिवो पर उपकार ॥ ६६ ॥

नारायण परलोक में यह दो आवत काम ॥ देना मुट्ठी अन्नकी लैना भगवत नाम ॥ ६७ ॥

कियो न मानत और को परहित करत न आप ॥ नारायण विनता पुरुष को मुख देखे सोंपाप ॥ ६८ ॥

रक्षा करी न जीवकी दियो न आदर दान ॥ नारायण ता पुरुष सों रूख भलो फलवान ॥ ६९ ॥

देत फूल फल पात दल तनक नीर तरु पाय ॥ नारायण तासों गयो खांड खीर नित खाय ॥ ७० ॥

नारायणदो बातको दीजै सदा बिसार ॥ करी बुराई औरने आप कियो उपकार ॥ ७१ ॥

दो बातन को भूलमति जो चाहै क ल्यान ॥ नारायणइक मौतको दूजे श्रीभगवान ॥ ७२ ॥

वशीकरणके मंत्र हैं नारायण यह चार ॥ रूप राग आधीनता सेवा भली प्रकार ॥ ७३ ॥

नारायण कीजै सदा दुष्ट संगको त्याग ॥ जिम लुहार के ढिंग परै वदन चिंगारी आग ॥ ७४ ॥

फूली लता करीलकी खिले मनोहर फूल ॥ नारायण ताके निकट भ्रमर न बैठत भूल ॥ ७५ ॥

नारायण ढिग संतके गये न होय बिगार ॥ ज्यों बिन मोल सुगंधिता मिलै समीप अतार ॥ ७६ ॥

अथ संतलक्षण.

तजि परअवगुण नीरकूं खीरगुणन सों प्रीति ॥ हंस संत की सर्वदा नारायण यह रीति ॥ ७७ ॥

तनकमान मनमै नहीं सबसों राखत प्यार ॥ नारायण ता संत पै बार बार बलिहार ॥ ७८ ॥

अति कृपाल संतोष वृति युगल चरणमें प्रीत ॥ नारायण ते संत वर कोमल वचन विनीत ॥ ७९ ॥

उदासीनजगसों रहैं यथा मान

अपमान ॥ नारायण ते संतजन निपुन भावना ध्यान ॥ ८० ॥

मगन रहें नित भजनमें चलतन चाल कुचाल ॥ नारायण ते जानिये ये लालनके लाल ॥ ८१ ॥

परहित प्रीति उदार चित विगत दंभमदरोस ॥ नारायन दुखमें लखें निज कर्मनको दोस ॥ ८२ ॥

भक्ति कल्पतरु पात गुन कथा फूल बहु रंग ॥ नारायणहरि प्रेम फल चाहत संत विहंग ॥ ८३ ॥

जिनको पूरण भक्ति है ते सबसों आधीन ॥ नारायण तजि मान मद ध्यानसलिलके मीन ॥ ८४ ॥

नारायणहरिभक्तिकी प्रथम यही पहिंचान ॥ आप अमानी ह्वै रहे देत और कूं मान ॥ ८५ ॥

कपट गांठ मनमें नहीं सबसों सरल सुभाव ॥ नारायणताभक्तकी लगी किनारे नाव ॥ ८६ ॥

जिनको मन हरिपद्द कमल निशिदिन भ्रमर समान ॥ नारायण तिनसों मिले कबू न होवै हान ॥ ८७ ॥

नारायण जो कृपा करि संत पधारें धाम ॥ आगे ते उठि प्रीति सों कीजै दंड प्रणाम ॥ ८८ ॥

संत दरसकी लालसा नारायण जो होय ॥ रीते कर नहिं जाइये फूल पत्र फल तोय ॥ ८९ ॥

अजापुत्र मैंमैं कहत दिये आपने प्राण ॥ नारायण मैंना भली खाय मली दा सान ॥१०॥

नारायण दुख सुख उभै भ्रमत यथा दिनरात ॥ विन बुलाय ज्यों आरहे विना कहे त्यों जात ॥११॥

नारायण हरि कृपाकी तकत रहैं नित बाट ॥ जानहार जिमिपारको निर खत नौकाघाट ॥१२॥

अथ कृपानिधानकी सोभा.

रतिपति छबि निंदित वदन नील जलज समश्याम ॥ नवजोवन मृदु हास वर रूप रास सुखधाम ॥१३॥

ऋतु अनुसार सुहावने अद्भुत

पहिरे चीर॥ जो निजछबिसोंहरत हैं धीरजहूकी धीर॥ ९४॥

मोर मुकुटकी निरखिछबिलाजत मदन किरोर॥ चंद्रवदन सुखसदन पै भावक नैनचकोर॥ ९५॥

जिन मोरनके पंख हरि राखत अपने सीस॥ तिनके भागनकी सखी को न करिसकै रीस॥ ९६॥

घुंघुरारी अलकावली मुखपै देत वहार॥ रसिक मीन मनके लिये कांटे अति अनियार॥ ९७॥

मकराकृत कुंडल श्रवण झांई परत कपोल॥ रूप सरोवर माहिं द्वै मछली करत किलोल॥ ९८॥

शुक लजात लखि नासिका अद्भुत छबिकी सार॥ तामें यक मोती परो अजब सुराही दार॥ ९९॥

दशन पाँति मुतियनलरी अधर ललाई पान॥ ताहूपै हँसि हेरबौ को लखि बचै सुजान॥ १००॥

मृदुमुसिक्यान निहारके धीर धरत है कौन॥ नारायण कै तन तजै कैवौ राकै मौन॥ १०१॥

अधरामृत सम अधररस जातन वंशी सार॥ सत सुरनसों सत करि कहत पुकार पुकार॥ १०२॥

रतनकी कंठी गरें मुक्तमाल वनमाल॥ त्रिविध ताप तीनों हरै जो निरखत नँदलाल॥ १०३॥

हस्त कमल पै मणिमय जग मगात कर फूल ॥ जिनकी छबि लखि शंभुरिपु गयो सकल सुधि भूल ॥ १०४ ॥

उदर माँहि त्रिवली शुभग नाभि रुचिर गंभीर ॥ छबि समुद्र के निकट अति भई त्रिवेनीभीर ॥ १०५ ॥

गजमुक्ताकी लरीद्वै अति अमोल छबि कंद ॥ सो अद्भुत कटि कोंधनी पहिर रह्यो ब्रजचंद ॥ १०६ ॥

गोल गुल्फपै सज रहे नूपुरसोभा ऐन ॥ जिनकी धुनि सुनि जगत सों मिटै लैन अरु दैन ॥ १०७ ॥

जुगल चरण दश अँगुरियां दशधा भक्ति सुहाय ॥ नखन जोति लखि चंद्रमा गयो अकाश उडाय ॥ १०८ ॥

तरुवन कि लखि अरुणता कविजन मनसकुचात ॥ इनकीउपमा काकहैं पट तर नाहिं दिखात ॥ १०९ ॥

ब्रज वीथिन जब सांवरो चलत सुचाल मतंग ॥ पग पग में छबिकी झरी होत चलै इक संग ॥ ११० ॥

जे रसिकन उर नित वसें निगमा गम को सार ॥ नारायण तिन चरणकी वार वार बलिहार ॥१११॥

नंनलालकीरति कुमारि यह कहिवे कूं दोय ॥ ज्यों तनकी छाया प्रगट तनसों विलग न होय ॥ ११२ ॥

या विधि सौ जो रसिक जनधरत दिवस निशि ध्यान ॥ नारायण ताकूं सदा गावत वेद पुरान ॥ ११३ ॥

चलत फिरत बैठत उठत लगी रहै यह आस॥श्याम राधिका निरखिवौ वृंदा विपिन निवास॥ ११४॥

नारायण होवे भलैं जो कछु होवन हार॥हरिसों प्रीति लगायकै अबका सोच विचार॥ ११५॥

नारायण अति कठिन है हरि मिलवेकी वाट॥या मारग सो पग धरै प्रथम शीश दे काट॥ ११६॥

अथ प्रेमलक्षण.

नारायण मनमें वसी लोकलाज कुल कान॥आशिक होना श्यामको हांसी खेलन जान॥ ११७॥

नेह डगरमें पग धरे फेरि विचारे ला

ज ॥ नारायण नेही नहीं वा तनको महाराज ॥ ११८ ॥

चौसर बिछी सनेहकी लगे शीशके दाव ॥ नारायण आशिक विना को खेले चित चाव ॥ ११९ ॥

गढि गढिके बातें कहै मनमें तनकन प्रीति ॥ नारायण कैसे मिलै साहिब सांचे मीति ॥ १२० ॥

जो सिर सांठे हरि मिलैं तो पुनि ली जै दौर ॥ नारायण ऐसी न हो गाहक आवै और ॥ १२१ ॥

सो क्यों सेवे बाग वन गुल्म लता तरु मूल ॥ नारायण जाके हृदय फूल रह्यो वह फूल ॥ १२२ ॥

नारायण प्रीतम निकट सोई पहुँचन हार॥ गेंद वनावै शीशकी खेलै बीच बजार॥ १२३॥

लगन लगन सबही कहैं लगन कहावै सोय॥ नारायण जा लग्नमें तन मन दीजै खोय॥ १२४॥

नारायण घांटी कठिन जहां नेहको धाम॥ विकल मूरछा ससक वौ यह मगमें विश्राम॥ १२५॥

नारायण या डगर में कौउ चलत हैं वीर॥ पग पगमें वरछी लगैं श्वास श्वासमें तीर॥ १२६॥

वरणाश्रम उरझे कोऊ विधि निषेध व्रत नेम॥ नारायण विरले लखे जिन मिल उपजे प्रेम॥ १२७॥

प्रेम नगर प्रीतम बसे पै नारायण नेत ॥ जानहार या ग्रामकूं कोइ दिखाई देत ॥ १२८ ॥

प्रेमी छुटियाप्रेमकी औरनजानै सार ॥ नारायण विन जोहरी जैसे लाल बजार ॥ १२९ ॥

तोलौं यह फांसी गरे वर्णाश्रम व्रत नेम ॥ नारायण जोलौं नहीं मुँह दिख रायो प्रेम ॥ १३० ॥

नारायण जाके हिये उपजत प्रेम प्रधान ॥ प्रथमहिं वाकी हरत है लोक लाज कुलकान ॥ १३१ ॥

नारायण या प्रेमको नद उमडतजा

ठौर॥ पलमें लाज मृजादके तट काटत है दौर॥ १३२॥

विधि निषेध श्रुति वेदकी मेंड देत सब मेट॥ नारायण जाके वदन लागत प्रेम चपेट॥ १३३॥

नारायण ज्ञाता अगम सबको संमत येह॥ बिना प्रेम कर्मादि विधि ज्यों ऊसरमें मेह॥ १३४॥

नारायण जप जोग तप सबसूं प्रेम प्रवीन॥ प्रेम हरी कौं करत है प्रेमीके आधीन॥ १३५॥

नारायण यह प्रेमरस मुखसों कह्यो न जाय॥ ज्यों गूंगौगुड खात है सेनन स्वाद लखाय॥ १३६॥

प्रेम खेल सबसूं कठिन खेलत कोउ सुजान ॥ नारायण विन प्रेमके कहा प्रेम पहिंचान ॥ १३७ ॥

जिनै प्रेम प्यालो पियो झूमत तिनके नैन ॥ नारायण वा रूप मद छके रहैं दिन रैन ॥ १३८ ॥

नारायण जाके हिये लगी प्रेम की डोर ॥ ताहीको जीवन सफल दिन काटै सब और ॥ १३९ ॥

नेम धर्म धीरज समझि सोच विचार अनेक ॥ नारायण प्रेमी निकट इनमें रहे न एक ॥ १४० ॥

रूपछके झूमत रहे तनको तनक न ज्ञान ॥ नारायण दृग जल भरे यही पेम पहिंचान ॥ १४१ ॥

मनमें लागी चटपटी कब निरखूं घनश्याम ॥ नारायण भूल्यो सबी खान पान विश्राम ॥ १४२ ॥

सुनत न काहूकी कहीं कहै न अपनी बात ॥ नारायण वा रूपमें मगन रहै दिन रात ॥ १४३ ॥

देहगेहकी सुधिनहीं टूटगईजग प्रीत ॥ नारायण गावत फिरै प्रेमभरे रस गीत ॥ १४४ ॥

धरत कहूं पग परतकित सुरत नहीं इक ठौर ॥ नारायण प्रीतम विना दीखत नहिं कछु और ॥ १४५ ॥

भयो बावरो प्रेममें डोलत गलियन माहिं ॥ नारायण हरिलग्नमें यह कछु अचरज नाहिं ॥ १४६ ॥

लतन तरे ठाढौ कबूं कबहूं यमुना तीर ॥ नारायण नैनन वसी मूरत श्याम शरीर ॥ १४७ ॥

प्रेमसहित गदगद गिरा कढत न मुख सों बात ॥ नारायण महबूब विन और न कछू सुहात ॥ १४८ ॥

कह्योचहै कछु कहत कछु नैननीर सुरभंग ॥ नारायण बौरा भयो लग्यौ प्रेमकौ रंग ॥ १४९ ॥

कबू हँसे रोवै कबू नाचत करि गुन गान ॥ नारायण सुधितन नहीं लग्यौ प्रेमको बान ॥ १५० ॥

सुरति लगीजा ध्यानमें सुमन और की बात ॥ नारायण उत्तर दियो मृदुल मनोहर गात ॥ १५१ ॥

जाके मन वह छबि वसी सोवत हू चररात ॥ नारायण कुंडल निकट अद्भुत अलक सहात ॥ १८२ ॥

नारायण जाके दृगन सुंदरश्याम समाय ॥ फूल पात फल डारमें ताकूं वही दिखाय ॥ १८३ ॥

ब्रह्मादिकके भोग सुख विष समला गत ताहि ॥ नारायण ब्रज चंदकी लगन लगी है जाहि ॥ १८४ ॥

नारायण हरि प्रीतिमें जाके तन मन चूर ॥ ताहि न ममता और सों निकट रहौ वा दूर ॥ १८५ ॥

जाके मनमें वस रही मोहन की मुसिक्यान ॥ नारायण ताके हिये और न लागत ज्ञान ॥ १८६ ॥

नारायण [illegible] रंग रूप तिल रेख ॥ उनके दृग गंभीर हैं इन के चपल विषेख ॥ १६६ ॥

नारायण या बात सों अधिक और नहिं बात ॥ रसिकनको सत संग नित जुगल ध्यान दिन रात ॥ १६७ ॥

गुण मंदिर सुंदर जुगल मंगल मोद निधान ॥ नारायण निज चरण रति यह दीजै वरदान ॥ १६८ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत
श्रीअनुरागरस सम्पूर्ण.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना- गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

जाहिरात.

भूषण आदि संस्कृत टीकात्रयसमेत

वाल्मीकीयरामायण.

महाशयो ! देखो इस अपूर्व भूषणटीकाकी पांडित्यशैली सुगमता, विचारचातुर्य आदि सब अद्भुत गुण कैसे चमकते हैं. देखो 'भूपण' यह नामभी कैसा अन्वर्थ रखा गया है जिसके श्रवणमात्रसेही कल्पना होती है कि रामायणरूपी भगवान् रामचंद्रजीकी मूर्तिको टीकारूपी अलंकारोंसे अलंकृत किया है. और ऐसीही टीकाकारने कल्पना कर रचना की है. देखो--कि उक्त भगवानके बालकांडरूपी पादको टीकारूपी मणिमंजीर (पायजेव), अयोध्याकांडरूपी जघनको पीतांबर, अरण्यकांडरूपी कटिको रत्नमेखला (कौंदनी) किष्किंधाकांडरूपी हृदय और कंठको मुक्ताहार (मोतियोंका कंठा) सुंदरकांडरूपी ललाटको शृंगारतिलक, युद्धकांडरूपी शिरको रत्नकिरीट और उत्तरकांडरूपी ऊपरके भागको मणिमुकुट इस तरह ये

गहने अर्पण कर रामायणरूपी भगवानको सजाया है. तो इस व्याख्यामें क्या कम है कुछ नहीं फिर लेनेमें क्या हरज है झट लीजिये और उसका पाठ कर अपना जन्म कृतार्थ कीजिये. यह २५ रुपये कीमतका पुस्तक लेने-वालोंको भगवद्गुणदर्पण भाष्य आदि व्याख्यात्रय समेत विष्णुसहस्रनाम (१२००० ग्रंथ) भेंट (किफायत) में मिल जाता है।

हरिवंश भाषाटीका.

हरिवंशको महाभारतकाही एक अंग कहते हैं कारण श्रीमहाभारतकी पूरी ग्रंथसंख्या तो विना हरिवंशके मि-लाये नहीं होती और श्रीमहाभारतके सप्ताह करनेवालेको हरिवंश ग्रंथ अवश्य पढना चाहिये. विना हरिवंशके महा-भारतकी समाप्तिही नहीं होती. इसके तीन पर्व हैं पहिला हरिवंशपर्व, दूसरा विष्णुपर्व, तीसरा भविष्यपर्व पहिले पर्वमें अध्याय ५५ हैं, दूसरेमें १२८ हैं, तीसरेमें

१३४ अध्याय हैं. इस ग्रंथमें भूतसर्ग (पृथिवी, आप्, तेज, वायु और आकाश इनकी उत्पत्ति) कहा है. फिर पृथुराजा (वैन्य) का चरित्र, चौदह मनुओंकी सविस्तर कथा, वैवस्वत (सूर्य) वंशकी उत्पत्ति, धुंधुमारवध कथा, गालवकी उत्पत्ति, पितृकल्प (पितरोंकी महिमाका वर्णन) इन सबका वर्णन विस्तारसे किया है. श्राद्धप्रयोगमें पितरोंकी प्रार्थनाके " सप्त व्याधा दशार्णेषु " इन श्लोकोंमें कहे हुए पितृभक्तितत्पर सात ब्राह्मणोंकी कथाभी बहुत विस्तारसे वर्णित है. तथा सोमवंशका वर्णन किया है; जिसमें दिवोदास, त्रिशंकु, ययाति, पुरु इत्यादि बडे २ पुण्यश्लोकोंका जन्म हुआ है. तथा इस वंशमें जिन भगवान् श्रीकृष्णजीने जन्म लेकर गृहस्थाश्रमियोंके चरित्रका अनुकरण किया है उन श्रीकृष्णजीकी सब लीलाओंका वर्णन विस्तारसे किया है. जो कि सब लोगोंको आनंद और भक्ति उत्पन्न करती है तथा आगे होनेवाले राजाओंकेभी वंश कहे हैं. ऐसा यह अत्युत्तम ग्रंथ तीन प्रकारसे छपके तैयार है.

१–संस्कृत टीकासह. की० ५ रु० । २– पं० ज्वालाप्रसादजीकृत भाषाटीकासह. की० १० रु० । ३–केवल भाषा, (जिल्द) इसमें श्लोकांक और प्रत्येक अध्यायके आद्यंत श्लोक हैं की० ग्ले० रु० ५, रफ् रु० ४. चाहिये वैसा नमुना भेजेंगे.

हितोपदेश (नीतिग्रन्थ).

(ब्रजरत्नभट्टाचार्य्य द्वारा हिन्दीभाषामें अनुवादित).

प्रिय वाचकवृन्द ! यद्यपि इस ग्रन्थका भाषानुवाद अनेक स्थानोंमें छपा है परंतु इसकी समताको कोई नहीं पा सक्ता इसका विषय तो इसके नामहीसे विदित होता है इसमें ऊपर संस्कृत मूल और नीचे शुद्ध और सरल भाषाटीका रक्खी गई है, जिससे पढनेवालोंको अत्यन्त सहायता मिलती है, हमारे यहांके मुद्रित अनुवादकी उत्तमता इसीसे प्रगट है कि यह अनेकों पाठशालाओंमें आदर पा रहा है, यदि सांसारिक निखिल व्यवहारोंमें निपुण होना हो तो इसे संग्रह करनेमें न चूकिये। सबके सुभीतेके लिये मूल्य केवल १॥ रु० ।

श्रीपराशरस्मृतिः (विशिष्टपरमधर्मशास्त्रम्)

यह पराशरस्मृतिका उत्तर खण्ड है. इसके दस अध्याय हैं, इसमें दीक्षा ग्रहण कैसा करना और भगवान्की पूजा कैसी करनी इत्यादि सब दीक्षाका विवेचन किया है यह ग्रन्थ आजतक कहांभी छपा नहीं है. की० ३ आना।

तत्त्वबोध (वेदान्त) भाषाटीकासहित—वेदांत-ग्रंथ बहुतही हैं तौभी वे सब कठिन होनेके हेतु सुकुमार बुद्धिवालोंकी समझमें नहीं आते इसीलिये श्रीशंकराचार्य स्वामीजीने वेदांतविषयपर चढनेकी इच्छावाले पुरुषोंके लिये यह पहिले सोपान (पैडी) रूप तत्त्वबोध निर्माण किया है. हमनेभी इसको सबकी समझमें आनेवाली सरल सुबोध आगरानिवासिरामेश्वरभट्टजीसे करवाई हुई भाषाटीकासे अलंकृत करके छपा है. भाषाटीका बहुत अच्छी है. की० २॥ आना

श्रीराधागोपालपञ्चाङ्गम्।

इसमें आगे लिखे हुए विषय हैं. १ त्रैलोक्यमंगलकव-

चम् । २ श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम् । ३ श्रीगोपालस्तोत्रम् । ४ श्रीकृष्णस्तोत्रम् । ५ विष्णुहृदयम् । ६ श्रीबिल्वमंगलस्तोत्रम् । ७ श्रीराधाकवचम् । ८ श्रीराधासहस्रनामस्तोत्रम् । ९ श्रीराधिकास्तवराजः । १० श्रीराधाकवचम् । ११ श्रीराधासहस्रनाम । १२ श्रीराधाकवचप्रश्नः की० १२ आ० ।

अनेकसंग्रह २ भाग	२–०
मयूरचित्रक मूल	०–३
मयूरचित्रक भा० टी०	०–६
सूर्यकवच	०–१
भुवनदीपक भाषाटीका और संस्कृत टीकासहित	०–८
वैद्यावतंस भाषाटीका	०–३
तर्कसंग्रह भा० टी०	०–६
बृहत्संहिता भाषाटीका ग्लेज कागज ...	४–०
” रफ्	३–८

रामगंगामाहात्म्य भा० टी०	....	....	०—२
ग्रहगोचर ज्योतिष भा० टी०	....	...	०—२
लघुसिद्धांत कौमुदी भा० टी०	...	...	२—४
भागवत मूल बडा खुलापत्रा	...	....	५—०
गीतामृतधारा भाषा ...	...	...	०—८
षट्पंचाशिका भा० टी०	....	...	०—६
मुक्तिकोपनिषद् भा०टी०		....	०—५
जगन्नाथमाहात्म्य बडा ४१ अध्याय		....	३—४
विनयपत्रिका सटीक. रफ् २ रु० ग्लेज ...			२—८
भजनसागर ग्लेज १ रु. रफ्	....		०—१२
मैत्रीधर्मप्रकाश भा० टी०	....	...	०—४
गीता रामानुज-भाष्य	...	...	२—०
गोविंदगुणवृन्दाकर ...	...	...	१—०
अखिलाखसागर वेदांत....	....	...	२—०
समासकुसुमावलि ...	....	...	०—२
संतानगोपालस्तोत्र ...	...	...	०—२

सुदर्शनशतक संस्कृत	०—४
विवाहविचार भाषा	०—२
भूलोकरहस्य	०—३
शिवकवच	०—१
मायापुरीमाहात्म्य (गंगा मा०) ...	०—१२
महावीराष्टक	०—१
जीवन्मुक्तगीता भा० टी०	०—१
मोहमोचनसमांग	०—२
हनुमानस्तोत्र	०—१
हारीतसंहिता भाषाटीका	३—०
बालसंस्कृतप्रभाकर नवीन संस्कृत सीखनेवालेको बहुत उपयोगी है	०—८
नासिकेत भाषा (वार्तिक)	०—५
मदनपालनिघंटु भा० टी०	२—४
अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित.... ...	०—१०
नृसिंहपचासिका	०—२

नारीधर्मप्रकाश	०-४
रंभाशुकसंवाद भा० टी०	०-२
पुरंजनाख्यान भाषाटीका	०-४
पंचयज्ञ भाषाटीका	०-४
संकल्पकल्पना	०-८
धौम्यनीति सटीक	०-२
तत्त्वबोध शंकरानंदप्रकाशिका भाषाटीका	०-६
सुदामाचरित्र	०-३
केवल गीता भा० टी० पाकेटबुक	०-८
संध्यावन्दनभाष्य संस्कृत	०-६
भजनरसमाल	०-५
बारहमासतरंग	०-६
अद्वैतसुधा (संस्कृत)	०-१०
भांतिसागर (भाई बनानेकी पुस्तक) ...	०-१

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना कल्याण-मुंबई.